कथा सरिता

हृदय से विचलित कर सके न कोई

एक बार संत सूरदास को किसी ने भजन करने के लिए आमंत्रित किया। भजनोपरांत उन्हें अपने घर तक पहुँचाने का ध्यान उसे नहीं रहा। सूरदास जी ने भी उसे तकलीफ नहीं देना चाहा और खुद हाथ में लाठी लेकर गोविंद-गोविंद करते हुए अंधेरी रात में पैदल घर की और निकल पड़े। रास्ते में एक कुआँ पड़ता था। वे लाठी से टटोलते-टटोलते भगवान का नाम लेते हुए बढ़ रहे थे और उनके पांव और कुएं के बीच मात्र कुछ दूरी रह गई थी कि उन्हें लगा कि किसी ने उसकी लाठी पकड़ ली है। तब उन्होंने पूछा, तुम कौन हो? उत्तर मिला बाबा मैं एक बालक हूँ। मैं भी आपका भजन सुनकर लौट रहा हूँ। आपका भजन सुनना मुझे बहुत प्रिय लगता है। देखा कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं इसलिए मैं इधर आ गया। चलिये आपको घर तक छोड़ दूँ। तुम्हारा नाम क्या है बेटा? सूरदास ने पूछा - बाबा अभी तक मेरी माँ ने मेरा नाम नहीं रखा है। तब मैं तुम्हें किस नाम से पुकारूँ? कोई भी नाम चलेगा बाबा। सूरदास ने रास्ते में और कई सवाल पूछे। उन्हें ऐसा लगा कि हो ना हो, यह कन्हैया है। वे समझ गए कि आज गोपाल खुद मेरे पास आये हैं। क्यों नहीं मैं इनका हाथ पकड़ लूँ। यह सोच उन्होंने अपना हाथ उस लकड़ी पर कृष्ण की ओर बढ़ाने लगे। श्री कृष्ण उनकी चाल समझ गये। सूरदास का हाथ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। जब केवल चार अंगुल का अंतर रह गया तब श्रीकृष्ण लाठी को छोड़ दूर चले गये। जैसे उन्होंने लाठी छोड़ी सूरदास विह्वल हो गये, आँखों से अश्रुधारा बह निकली। बोले मैं अंधा हूँ, ऐसे अंधे की लाठी छोड़ कर चले जाना क्या कन्हैया तुम्हारी बहादुरी है और उनके श्रीमुख से वेदना के यह स्वर निकल पड़े।

बांह छुड़ाके जात हैं, निर्बल जानी मोही।
हृदय छोड़के जाय तो मैं मर्द बखानू तोही।

मुझे निर्बल जानकर मेरा हाथ छुड़ा कर जाते हो, पर मेरे हृदय से जाओ तो मैं तुम्हें जानूं। श्री कृष्ण ने कहाः बाबा, अगर मैं आप जैसे भक्तों के हृदय से चला जाऊंगा तो फिर मैं कहाँ रहूँगा?

आपसी समझ में है झगड़े का हल

कबीर जी रोज सत्संग किया करते थे, लोग आते और चले जाते। एक आदमी सत्संग खत्म हो गया फिर भी बैठा रहा। कबीर जी बोले क्या बात है वो इन्सान बोला मैं तो काफी दूर से आया हूँ मुझे आपसे कुछ पूछना है। क्या पूछना है? कबीर जी बोले।

वो कहने लगा कि मैं गृहस्थी हूँ मेरा घर में झगड़ा होता रहता है। उसके बारे में जानना चाहता हूँ कि झगड़ा कैसे दूर हो तो कबीर जी चुप रहे थोड़ी देर में कबीर जी ने अपनी पत्नी से कहा लालटेन जला के लाओ। कबीर की पत्नी लालटेन जलाकर ले आई। कबीर जी के पास रख दी वो आदमी भी वहीं बैठा था सोच रहा था कि इतनी दोपहर है और लालटेन मँगा ली। खैर! मुझे इससे क्या।

फिर कबीर जी बोले कुछ मीठा दे जाना। तो उनकी स्त्री नमकीन देकर चली गई। उस आदमी ने फिर सोचा कि यह तो शायद पागलों का घर है मीठे के बदले नमकीन, दिन में लालटेन, वो आदमी बोला कबीर जी मैं चलता हूँ। मन में सोचने लगा कहाँ फँस गया।

कबीर जी समझ गए बोले आपको आपके झगड़े का हल मिला कि नहीं। वो बोला क्या मिला? कुछ नहीं। कबीर जी ने कहा जैसे मैंने लालटेन मंगवाई घर वाली कह सकती थी कि तुम क्या सठीया गये हो इतनी दोपहर में क्या करोगे। उसने सोचा होगा किसी काम के लिए मंगवाई होगी। मीठा मंगवाया तो नमकीन देकर चली गयी, हो सकता है घर में न हो पर मैं भी चुप रहा। इसमें तकरार क्या?

तुम भी समझो, तकरार करना छोड़ो। एक दूसरे की बात को समझो। आपसी विश्वास बनाओ। वो आदमी हैरान था यह सब इन्होंने मेरे लिए किया। उसको समझ आने लगी गृहस्थी हो या दोस्ती, दोनों में तालमेल, आपसी विश्वास बहुत जरूरी है।

किसी से वैर व तकरार न रखो।
आवश्यक होने पर एक दूसरे की सहमति में इज़हार करो।

हम जो बोते, वही पाते

एक मांसाहारी परिवार था। परिवार का प्रमुख रोज़ एक मुर्गे को हलाल करता था। मुर्गा चीखता और वह अट्टहास भरता!! उसके तीन अबोध बच्चे थे। बड़ा करीब चार वर्ष का था, दूसरा ढाई वर्ष का और तीसरा गोद का बच्चा था। उसके बच्चे जब पिता के इन कृत्यों को देखते तो उन्हें लगता कि उनके पिता कोई खेल खेलते हैं और पिता को उसमें बड़ा आनन्द आता है।

एक दिन पिता किसी काम से कहीं बाहर गये, घर में मुर्गा नहीं आया तो बच्चों ने सोचा कि आज पिता जी नहीं है तो चलो आज हम ही यह खेल खेलें, बड़े बेटे ने छोटे को लिटाया, लिटाकर एक पैर से उसे दबाया, एक हाथ से सिर दबाया और उसके गले को छुरे से रेत दिया, जैसे ही गला रेता, बच्चा चीख पड़ा। भाई की चीख सुनकर यह भी घबराकर भागा।

चीख की आवाज़ सुनी, तो माँ जो अपने छोटे बेटे को टब में नहला रही थी। वह उसे वहीं छोड़कर आवाज की दिशा की ओर भागी, बेटे ने देखा माँ आ रही है और अब मुझे मारेगी तो उसने अपना मानसिक सन्तुलन खो दिया और छत से कूदकर अपनी जान दे दी, तो इधर वह बेटा भी गले की नस कट जाने के कारण मर चुका था। माँ दोनों बेटों का हाल देखकर वहीं मूर्छित होकर गिर गई।

काफी देर बाद जब माँ को होश आया तो याद आया कि वह छोटे बेटे को टब में नहलाता हुआ छोड़कर आई थी, मगर तब तक काफी समय गुजर चुका था। जब वह नीचे आई तो उसकी गोद का बालक टब में ही शांत हो चुका था। ये है पाप का कहर, आदमी पाप करता है, तो उसका परिणाम उसे भुगतना ही पड़ता है। मगर अफसोस कि मनुष्य सब चीजों को देखते हुए समझते हुए भी पाप करने से भय नहीं खाता।

जो बोयेंगे, ऐसा ही काटेंगे
पाप का फल, आज नहीं तो कल।

कटक-ओडिशा। समाज सेवा प्रभाग द्वारा 'न्यू डायमेन्शन इन सोशल सर्विस' विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. नथमल, ब्र.कु. विजया, ब्र.कु. सुलोचना, शशी भूषण बेहरा,स्टेट मिनिस्टर,फाइनेन्स एंड एक्साइज़, ब्र.कु. कमलेश,ब्र.कु. अमीरचंद, प्रफुल्ल समल,स्टेट मिनिस्टर, ब्र.कु. अरूण पंडा, ब्र.कु. प्रेम सिंह, ब्र.कु. बिरेन्द्र तथा लेफ्टिनेंट चंद्रशेखर पटनायक,डिस्ट्रिक्ट गवर्नर,इंटरनेशनल लॉयन्स क्लब।

फाज़िल्का-पंजाब। पूर्व स्वास्थ्य राज्यमंत्री सुरजीत ज्यानी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. प्रिया।

दिल्ली-मजलिस-पार्क। एम.सी.डी. समिति सदस्य एवं निगम पार्षद मुकेश गोयल को राखी बांधते हुए ब्र.कु. राजकुमारी। साथ हैं ब्र.कु. शारदा।

बस्सी-राज.। आध्यात्मिकता के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दैनिक भास्कर की ओर से ब्र.कु. ललिता को सम्मानित करते हुए परवेश पारिक।

इटानगर-अरुणाचल प्रदेश। सेवाकेन्द्र पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में वी.पी. सिंह, एक्ज़ीक्यूटिव इंजीनियर डूडा तवंग, लोकपाल सिंह,कमांडेंट,आई.टी.बी.पी.,तवंग, अजीत कुमार,असिस्टेंट डायरेक्टर,ऑल इंडिया रेडियो तवंग तथा ब्र.कु. बहनें।

जमशेदपुर-झारखण्ड। सेवाकेन्द्र पर ओ.बी.एस., गायने सोसायटी तथा ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'अद्भुत मातृत्व' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मोटिवेशनल स्पीकर प्रो. ब्र.कु. ई.वी. स्वामीनाथन, डॉ. शुभदा नील,मुम्बई, पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय बॉक्सर अरूणा मिश्रा, जमशेदपुर गायने सोसायटी की अध्यक्षा डॉ. रागिनी बघई, कार्यक्रम संयोजिका डॉ. वीना सिन्हा, समाजसेवी कमलेश लाम्भा तथा ब्र.कु. अंजू।

अम्बाला-पंजाब। बी.एस.एन.एल. टेलिफोन एक्सचेंज में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. प्रीति तथा अन्य स्टाफ।

बाढ़-बिहार। एस.डी.एम. आर के कलाई को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

मोतिहारी-बिहार। गांधी आश्रम में आयोजित 18वें सर्वधर्म गांधी पूजोत्सव में ब्र.कु. विभा एवं ब्र.कु. रेणू को समाज के प्रति उत्कृष्ट कार्यों हेतु सम्मानित करते हुए आयोजक तारकेश्वर प्रसाद। साथ हैं पूर्व प्राचार्या शशिकला।

पांवटा साहिब-हि.प्र.। शिलाई तहसील में 'सच्ची सुख-शांति का आधार - राजयोग' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुमन। जेल अधीक्षक प्रतापसिंह तोमर, ब्र.कु. धर्मवीर, ब्र.कु. रामनाथ,माउंट आबू, तहसील उपमंडलाधिकारी एम.आर.कश्यप, बी.डी.ओ. कँवर सिंह तथा अन्य।